www.PapaCambridge.com

CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS

General Certificate of Education
Advanced Subsidiary Level and Advanced Level

HINDI — 8675/4, 9687/4

PAPER 4 Texts

OCTOBER/NOVEMBER SESSION 2002

2 hours 30 minutes

Additional materials:
Answer paper

TIME 2 hours 30 minutes

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

Write your name, Centre number and candidate number in the spaces provided on the answer paper/answer booklet.

Answer any **three** questions, each on a different text. You must choose one question from Section 1, one from Section 2 and one other.

Write your answers in **Hindi** on the separate answer paper provided.

You should write between 500 and 600 words for each answer.

If you use more than one sheet of paper, fasten the sheets together.

INFORMATION FOR CANDIDATES

Dictionaries are not permitted.

All questions in this paper carry equal marks.

You may take unannotated set texts into the examination.

You are advised to divide your time equally between your answers.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

अपना नाम, केन्द्र-संख्या और छात्र-संख्या उत्तर-पुस्तिका में दिए गए स्थानों में लिखिए।

केवल तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए, हर प्रश्न भिन्न-भिन्न पाठ्य पुस्तकों से चुना जाना चाहिए। भाग १ से एक प्रश्न, भाग २ से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। तीसरा प्रश्न किसी भी भाग से चुना जा सकता है।

अपने उत्तर दिए गए परीक्षा पत्रों पर ही लिखें।

अपने उत्तर 500 से 600 शब्दों तक ही सीमित रखिए।

यदि आप एक से अधिक पृष्ठों का प्रयोग करते हैं तो उन्हें धागे से एक साथ बाँध दें।

परीक्षार्थियों के लिए सूचना

शब्द-कोष का प्रयोग निषेध है।

हर प्रश्न के अन्त में कोष्ठक [ ] के अन्दर उस प्रश्न के अधिकतम अंक लिखे हुए हैं।

आप परीक्षा में पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग कर सकते हैं पर उसमें आपका कोई अपना आलेख नहीं होना चाहिए।

आपको परामर्श दिया जाता है कि आप हर उत्तर के लिए बराबर-बराबर समय दें।

This question paper consists of 6 printed pages and 2 blank pages.

www.PapaCambridge.com

भाग 1

1 तुलसी दास - श्रीरामचरितमानस

जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । बेद पुरान संत सब कहहीं ।।
उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ।।६।।
मध्यम परपति देखइ कैसें । भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ।।
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई ।सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ।।७।।
बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ।।
पति बंचक परपति रति करई । रौरव नरक कल्प सत परई ।।८।।
छन सुख लागि जनम सत कोटी ।दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ।।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ।।९।।
पति प्रतिकूल जनम जँह जाई । बिधवा होइ पाइ तरुनाई ।। १० ।।
सो. - सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ।।५ क ।।

- ***अरण्य काण्ड*** *(सीता-अनसूया सम्वाद)*

प्रश्न 'क' और 'ख' में से केवल एक प्रश्न का ही उत्तर दीजिए ।

(क)

(i) ऊपर लिखी चौपाइयाँ किस सन्दर्भ में लिखी गई हैं ?

(ii) पद्य में कितने प्रकार की पतिव्रताओं का उल्लेख है ? लक्षणों के साथ उनकी विस्तृत विवेचना कीजिए ।

(iii) आधुनिक परिवेश में इन मूल्यों का औचित्य या स्थान क्या है इस पर अपने विचार प्रगट कीजिए । [25]

(ख) 'लक्ष्मण-क्रोध' के सन्दर्भ में "भरत का चित्रकूट आना, राम और लक्ष्मण दोनों के लिए चिन्ता का कारण बन जाता है, लेकिन दोनों की चिन्ताएँ कितनी भिन्न-भिन्न हैं ।" इस कथन के माध्यम से राम और लक्ष्मण के चरित्रों की तुलनात्मक विवेचना कीजिए ।

[25]

www.PapaCambridge.com

2 सूरदास :

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी ।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, कौ दासी ?
कैसो बरन, भेष है कैसो, किहिं रस को अभिलाषी ।।
पावैगो पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, 'सूर' सबै मति नासी ।।४२४१ / ३६३१।।

'सूर-सागर'

प्रश्न 'क' और 'ख' में से केवल एक प्रश्न का ही उत्तर दीजिए ।

(क)

(i) उपर्युक्त पद्य-खण्ड में " निरगुन " और "मधुकर" शब्दों का प्रयोग किसके लिए और क्यों किया गया है?

(ii) इस पद में भक्ति के एक मार्ग का खण्डन और एक मार्ग का अनुमोदन किया गया है, इसकी पुष्टि विस्तार पूर्वक कीजिए ।

(iii) इस पद्यांश की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए । [25]

(ख) "सूरदास की अंधी आँखों ने कृष्ण के जिस बाल स्वरूप के दर्शन किये हैं वह तो दो-दो आँखों वालों को भी दुर्लभ है ।" इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

[25]

www.PapaCambridge.com

3 **जयशंकर प्रसाद** : जाग री एवं सौन्दर्य

जाग री !

बीती विभावरी जाग री !
अम्बर-पनघट में डुबो रही
तारा - घट ऊषा - नागरी ।

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो, यह लतिका भी भर लाई
मधु-मुकुल नवल-रस गागरी !

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये,
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

सौन्दर्य

तुम कनक किरण के अन्तराल में
लुक- छिप कर चलते हो क्यों ?

नत-मस्तक गर्व वहन करते
यौवन के घन, रस-कन झरते,
हे लाज भरे सौन्दर्य बता दो
मौन बने रहते हो क्यों ?

अधरों के मधुर कगारों में
कल-कल ध्वनि के गुंजारों में,
मधु-सरिता-सी यह तरल हँसी ?
अपनी पीते रहते हो क्यों ?

बेला विभ्रम की बीत चली
रजनीगंधा की कली खिली
अब सान्ध्य - मलय आकुलित
दुकूल कलित हो, यों छिपते हो क्यों ?

प्रश्न 'क' और 'ख' में से केवल एक प्रश्न का ही उत्तर दीजिए ।

(क)

(i) "जाग री" और "सौन्दर्य" दोनों कविताओं का भावार्थ सन्दर्भ सहित लिखिए ।
(ii) "दोनों कविताएँ छायावाद से निकल कर रहस्यवाद की ओर अग्रसर हैं।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? [25]

(ख) जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानन्दन पन्त की एक-एक कविता को लेकर उनकी तुलनात्मक विवेचना कीजिए । [25]

www.PapaCambridge.com

4 मैथिलीशरण गुप्त :

उद्बोधन

पुरुषत्व दिखलाओ पुरुष हो, बुद्धि-बल से काम लो,
तब तक थककर तुम कभी अवकाश या विश्राम लो-
जब तक कि भारत पूर्व के पद पर न पुनरासीन हो,
फिर ज्ञान में विज्ञान में जब तक न वह स्वाधीन हो ।।५०।।

निज धर्म का पालन करो, चारों फलों की प्राप्ति हो,
दुःख-दाह , आधि-व्याधि सबकी एक साथ समाप्ति हो ।
ऊपर कि नीचे एक भी सुर है नहीं ऐसा कहीं-
सत्कर्म में रत देख तुमको जो सहायक हो नहीं ।।५१।।

देखो, तुम्हें पूर्वज तुम्हारे देखते हैं स्वर्ग से,
करते रहे जो जो लोक का हित उच्च आत्मोसर्ग से ।
है दुख उन्हें अब स्वर्ग में भी पतित देख तुम्हे अरे !
सन्तान हो तुम उन्हीं की राम ! राम ! हरे-हरे ।।५२।।

अब तो विदा कर दुर्गुणो को सद्गुणो को स्थान दो,
खोया समय यों ही बहुत बहुत अब तो उसे सम्मान दो ।
चिरकाल तिमिरावृत्त रहे , आलोक का भी स्वाद लो,
हो योग्य सन्तति, पूर्वजों से दिव्य आर्शीवाद लो ।।५३।।

जग को दिखा दो यह कि अब भी हम सजीव सशक्त हैं,
रखते अभी तक नाड़ियों में पूर्वजों का रक्त है ।
ऐसा नहीं कि मनुष्यरुपी और कोई जन्तु है ,
अब भी हमारे मस्तकों में ज्ञान के कुछ तन्तु हैं ।।५४।।

'भारत भारती'-उद्बोधन-भविष्यत् खण्ड

प्रश्न 'क' और 'ख' में से केवल एक प्रश्न का ही उत्तर दीजिए ।

(क)

(i) 'उद्बोधन' कविता के मूल-भावों की व्याख्या कीजिए ।

(ii) इस कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए ।

[25]

(ख)

"मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक युग के प्रथम चरण के राष्ट्रीय कवि हैं जो अपने देश, जाति और प्राचीन मूल्यों पर गर्व रखते हुए आधुनिक प्रगति का सहर्ष स्वागत करते हैं । भारत भारती में संकलित अतीत के खण्ड में 'आदर्श' और 'स्त्रियाँ' तथा भविष्यत् खण्ड की 'उद्बोधन' कविताएँ उनके इन्हीं भावों को प्रकाशित करती हैं।" इस कथन की पुष्टि उद्धरणों के साथ कीजिए । [25]

www.PapaCambridge.com

भाग 2

5 प्रेमचन्द : 'निर्मला'

(क) 'निर्मला' में वर्णित मूल-भूत समस्याओं की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए ।

या

(ख) "निर्मला एक बड़ी मधुर-भाषिणी स्त्री थी पर अब उसकी गिनती कर्कशाओं में की जाती थी ।" 'निर्मला' उपन्यास में निर्मला के इस भाव परिवर्तन का विवेचन करते हुए उसके चरित्र का वर्णन कीजिए । [25]

6 जैनेन्द्र कुमार - '२३ हिन्दी कहानियाँ'

(क) विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की 'ताई' नामक कहानी में चित्रित रामेश्वरी की कुण्ठित मातृ-भावना की व्याख्या कीजिए ।

या

(ख) "प्रेमचन्द की 'कफन' तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण करती है ।" इस कथन की व्याख्या कीजिए । [25]

7 जयशंकर प्रसाद : 'ध्रुवस्वामिनी'

(क) " सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से छल छन्द की धूल उड़ती है ।" रामगुप्त के चरित्र के माध्यम से इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

या

(ख) "ध्रुवस्वामिनी में प्रसाद जी की क्रान्तिकारी भावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं ।" इस कथन पर प्रकाश डालिए । [25]

8 अभिमन्यु अनत : 'शब्द भंग'

(क) 'शब्द भंग' आधुनिक युग के राजनीति चक्र में पिसते हुए समाज का एक जीता जागता चित्र प्रस्तुत करता है, इसकी समीक्षात्मक विवेचना कीजिए ।

या

(ख) 'शब्द भंग' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए । [25]

BLANK PAGE

www.PapaCambridge.com

BLANK PAGE

www.PapaCambridge.com